रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवालें द्वार।
तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार।।७८ ।।

रंग तथा नग की नक्शकारी नहीं कही जाती तो थंभ, दीवारों, दरवाजों की और सबकी शोभा जो बेशुमार है, यहां की जबान कैसे बयान करें?

रंग नंग नकस अन-गिनती, कह्यो न जाए सुमार।
ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार।।७९ ।।

रंग, नग, नक्श अनगिनत हैं। जैसे बट का विशाल पेड़ एक छोटे से बीज में से होता है, उसी तरह से हे सुन्दरसाथजी! इस शोभा को जो मैंने बताई है बीज के समान विचारकर देखो।

कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार।
एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार।।८० ।।

कई दीवारें, चौक, थंभे, मन्दिर, किवाड़, दरवाजे एक भोम के वर्णन नहीं कर सकती हूं और इनका तो विस्तार नौ भोमों में है। कैसे कहा जाएगा?

दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत।
तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत।।८१ ।।

दसवीं भोम में चांदनी है। ऊपर कांगरी बनी है। जिसका तेज आकाश में नहीं समाता, ऐसा लगता है।

हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता।
नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता।।८२ ।।

सोना, जवाहरात, रंग, रेशम जो कुछ भी मुख से कहा है वह मेरी अक्ल, जबान में जितने आए उनके तेज की झलकार का वर्णन किया है।

महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन।
ले सको सो लीजियो, ए नेक कह्या तुम कारन।।८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! यह मैंने अपनी बुद्धि और जबान से वर्णन किया है। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है, इसलिए ले सको, तो इसे ले लेना।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। २२६२ ।।

प्रेम को अंग बरनन

प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, सुन्दरसाथजी! प्रेम अपने मूल वतन परमधाम में ही है। वह मैं तुम्हें दिखाती हूं। प्रेम श्री राजजी महाराज का अंग है जो परमधाम के बिना और कहीं नहीं है।

प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, न तो प्रेम दुनी में कित।।२ ।।

प्रेम का नाम तो ब्रह्मसृष्टियों ने ही दुनियां में आकर बताया अन्यथा दुनियां में प्रेम कहीं था ही नहीं।

Nijanand App

ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेश्वर।
सास्त्र अर्थ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर।। ३ ।।

दुनियां ब्रह्मा, विष्णु, महेश को परमात्मा मानकर पूजा करती है। शास्त्रों से भी ऐसा अर्थ लेते हैं कि इनके ऊपर कोई और नहीं है।

सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सरूप बृज रास।। ४ ।।

शुकदेव मुनि और व्यासजी भागवत में कहते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पास प्रेम नहीं है। प्रेम केवल ब्रह्मसृष्टियों में है जिन्होंने बृज-रास में प्रेम का ही खेल, खेलकर बताया।

तो नवधा से न्यारा कह्या, चौदे भवन में नाहें।
सो प्रेम कहां से पाइए, जो रेहेत गोपिका माहें।। ५ ।।

प्रेम नवधा भक्ति से अलग है। यह प्रेम चौदह लोकों में नहीं है। यह मात्र गोपियों के अन्दर है, इसलिए दुनियां में प्रेम कहां से मिलेगा?

नाम खुदाए का कुरान में, लिख्या है आसिक।
पढ़े इस्क औरों में तो कहें, जो हुए नहीं बेसक।। ६ ।।

कुरान में खुदा को आशिक लिखा है, परन्तु पढ़े-लिखे लोग दूसरे ठिकानों में इश्क को ढूंढ़ते हैं, क्योंकि इनके संशय नहीं मिटे।

आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इसदाए।
इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए।। ७ ।।

यह तो शुरू से ही लिखा है कि अल्लाह अपनी रूहों के आशिक हैं, इसलिए इश्क खुदा के सिवाय और कहीं नहीं मिलता।

पढ़े तब पावें इस्क को, जब खुलें माएने मगज।
इस्क बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज।। ८ ।।

पढ़े-लिखे लोग जब कुरान के रहस्य को समझें तब तो उन्हें इश्क की पहचान हो। यह बन्दगी बिना इश्क के करते हैं और कहते हैं कि हम खुदा का कर्ज उतार रहे हैं।

मगज न पाया माएना, दुनी पढ़े कतेब वेद।
प्रेम दुनी में तो कहें, जो पावत नाहीं भेद।। ९ ।।

दुनियां के वेद, कतेब पढ़ने वाले लोगों ने इनके रहस्य को नहीं समझा, इसलिए वह प्रेम और इश्क के भेद को नहीं समझ पाते और कहते हैं कि प्रेम दुनियां में है।

प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं, सो दोऊ दुनी में नाहें।
पढ़े दोऊ बतावें दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों माहें।। १० ।।

प्रेम और पारब्रह्म एक ही स्वरूप हैं, इसलिए दोनों दुनियां में नहीं हैं। पढ़े-लिखे लोग शास्त्रों को नहीं समझते, इसलिए प्रेम और पारब्रह्म को दुनियां में बताते हैं।

Nijanand App

तो न्यारा कह्या सब्द थें, प्रेम ना मिनें त्रिगुन।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धनी बिन।। ११ ।।

प्रेम त्रिगुण के पास नहीं है। यह शब्दातीत है। यह प्रेम करोडों ब्रह्माण्डों में नहीं है। यह केवल धाम धनी (अक्षरातीत पारब्रह्म) में ही है।

प्रेम सब्दातीत तो कह्या, जो हुआ ब्रह्म के घर।
सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर।। १२ ।।

प्रेम पारब्रह्म का ही अंग होने के कारण शब्दातीत कहा गया है, इसलिए वह निराकार के पार के पार अक्षरातीत धाम में है तो फिर दुनियां उसे इस संसार में कहां से प्राप्त कर सकती है?

प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, पेहेले देखो धाम बरनन।
पीछे प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, जो धाम धनी के तन।। १३ ।।

मैं ब्रह्मसृष्टियों का प्रेम बतलाती हूं। उससे पहले दिव्य ब्रह्मपुर धाम की हकीकत देखो। ब्रह्मसृष्टि धाम धनी के ही अंग (तन) हैं और इसलिए वह भी प्रेम के ही स्वरूप हैं।

क्यों न होए प्रेम इनको, जिन सिर नूरजमाल।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका औरै हाल।। १४ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों के सिरताज नूरजमाल हैं उनको प्रेम क्यों नहीं होगा? जो प्रेम कई कोटि ब्रह्माण्डों में नहीं मिलता, वह ब्रह्मसृष्टि के अंग अंग में समाया है।

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी अछरातीत जिन सिर।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फेर फेर।। १५ ।।

जिनके धनी (खाविंद) खुद अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हैं उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा? करोड़ों ब्रह्मांडों में बार-बार देख लो, परन्तु प्रेम ब्रह्मसृष्टि के बिना कहीं नहीं मिलेगा।

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी राखत रुख।
धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख।। १६ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा स्वयं पारब्रह्म (श्री राजजी महाराज) पूरी करते हैं तो फिर उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा? इन ब्रह्मसृष्टियों को श्री राजजी महाराज परमधाम में सेज्या सुख भी देते हैं।

क्यों न होए प्रेम इनको, सोहागनियां बड़ भाग।
क्यों कहूं इन रूहन की, जाए देत धनी सोहाग।। १७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां सुहागिनी हैं और बड़ी भाग्यशाली हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज का अखण्ड सुहाग प्राप्त है। उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके घर एह धाम।
स्याम स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम।। १८ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों का घर ही परमधाम है और सदा श्री राजश्यामाजी के साथ विश्राम करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इनहीं में रहे हिल मिल।
सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल।। १९ ।।

जो ब्रह्मसृष्टियां सदा श्री राजजी महाराज से ही हिल-मिलकर रहती हैं और श्री राजजी महाराज अपने दिल से सभी अंगों का सुख देते हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहे इन मोहोल मंदिर।
दिल दे विहार करत हैं, ले दिल धनी अंदर।। २० ।।

ब्रह्मसृष्टियां जो रंग महल के मन्दिरों में रहने वाली हैं और जो अपना दिल देकर श्री राजजी महाराज का दिल लेती हैं और आनन्द विहार करती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए वस्तर भूखन।
साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन।। २१ ।।

जो ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी महाराज के वास्ते सब अंगों में वस्त्र आभूषण सजाती हैं, उनके अन्दर प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए सोभा सिनगार।
सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन लेत समार।। २२ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों का प्रेम ही शोभा और सिनगार है और श्री राजजी महाराज से सब अंगों का सुख दिन-रात लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन धनी सों विहार।
निस दिन केलि करत हैं, सब अंगों सुखकार।। २३ ।।

जो सखियां सदा धनी से प्रेम-विहार करती हैं और रात-दिन अपने प्रीतम से प्रेम-क्रीड़ा से सब अंगों का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी।
रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी।। २४ ।।

जो सखियां रात-दिन अपने धनी को देखती हैं और अपने सब अंगों से रात-दिन सुख लेती हैं, तो इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी की सेंना लेत।
नैनों नैन मिलाए के, सामी इसारत देत।। २५ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के नैनों से नैन मिलाकर सैन (इशारे) समझती हैं और इशारे से ही अपने नैन देती हैं (स्वीकृति देती हैं), तो उनको प्रेम क्यों न होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी अरधंग।
अह निस अनुभव होत है, इन पिउ की सेज सुरंग।। २६ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और रात-दिन पिया की सेज्या का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मेले में बैठत।
अरस–परस रंग अहनिस, नए नए खेल करत।। २७ ।।

जो सखियां इस परमधाम के मेले (मूल-मिलावा) में रहती हैं और रात-दिन अरस-परस नए-नए खेल खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको ए धनी सरूप।
रात दिन सुख लेत हैं, जाके सब अंग अनूप।। २८ ।।

जो सखियां धनी के ही स्वरूप हैं और जिनके अंग बेशुमार सुन्दर हैं और जो रात-दिन धनी का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको निस दिन एही रमन।
सब अंगों आनन्द होत है, मिलावे धनी इन।। २९ ।।

जिन सखियों का रात-दिन धनी के साथ मिलकर सब अंगों से खेलना और आनन्द करना ही काम है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन धनी की गलतान।
निस दिन धनी खेलावत, विध विध की देत मान।। ३० ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के इश्क में ही गर्क हैं तथा जिन्हें श्री राजजी महाराज तरह-तरह से मान देकर दिन-रात खेल खिलाते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत धनी को सुख।
आठों जाम सेवा मिने, सदा खड़े सनमुख।। ३१ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की सेवा में रात-दिन हाजिर खड़ी रहकर सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन साथ में रस रंग।
निस दिन विहार करत हैं, धाम धनी के संग।। ३२ ।।

जो सखियां धाम धनी और सुन्दरसाथ के साथ में रात-दिन आनन्द विहार करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहें इन साथ के माहें।
निस दिन आराम पिउ का, न्यारे निमख न होवें क्याहें।। ३३ ।।

वह सखियां जो सदा सुन्दरसाथ में रहकर रात-दिन प्रीतम का सुख लेती हैं और एक पल भी धनी से अलग नहीं होतीं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को लेवें माहें नैन।
न्यारे निमख न करें, निस–दिन एही सुख चैन।। ३४ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज को अपने नैनों में बसाए हैं और एक क्षण भी उनको अपने नैनों से अलग नहीं करतीं और रात-दिन उसी में सुख और चैन का अनुभव करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखें धनी के अंग।
पलक ना पीछी फेरत, आठों-जाम उछरंग।। ३५ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के स्वरूप को ही निहारती रहती हैं और रात-दिन उसी में गर्क रहती हैं और एक क्षण के लिए नजर हटाती नहीं हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको याही साथ में खेल।
मन्दिर या मोहोलन में, पिउ सो रमन रंग रेल।। ३६ ।।

जो सखियां मन्दिर या महल में धनी से, रंगरेलियां करती हैं और दिन-रात यही खेल खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको मिलाप इन घर।
विहार करत अंग उछरंग, धनी सों बिध बिध कर।। ३७ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के साथ तरह-तरह से परमधाम में मस्ती के साथ आनन्द विहार करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बैठत पिउ के पास।
निस-दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वांस।। ३८ ।।

जो सखियां रात-दिन प्रीतम के पास बैठती हैं और रात-दिन हंसी-विनोद ही करती हैं और एक सांस भी व्यर्थ नहीं जाने देतीं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, हांस विनोद में दिन जाए।
सेज्या संग इन धनी के, रस रंग रैन विहाए।। ३९ ।।

जिन सखियों का हंसी और विनोद में ही दिन बीतता है तथा धनी के साथ रात भर सेज्या का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी के तन।
इन मोहोलों में इन पिउ संग, हींचत हिंडोलन।। ४० ।।

जो सखियां धाम धनी के ही तन हैं तथा उन्हीं के साथ महलों में झूला झूलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झांकत झरोखे इन।
झूलत हैं इन पिउ संग, बीच इन हिंडोलन।। ४१ ।।

जो सखियां धनी के साथ हिंडोले में झूलती हैं और झरोखे से झांकती है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें इन हिंडोलों विहार।
झूलत बोलें झनझनें, यों मन्दिर होत झनकार।। ४२ ।।

जो सखियां हिंडोले झूलती हैं और झूलते समय मन्दिरों में उनके पैरों की झनकार होती है और झुनझुनें बजते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, ऊपर झूलत हैं यों कर।
अरस–परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर।।४३।।

जो सखियां धनी की नजर से नजर बांधकर झूला झूलती हैं, तो उन्हें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें इन हिंडोलों सुख।
झलकत भूखन झूलते, बैठत हैं सनमुख।।४४।।

जिन सखियों के झूला झूलने में आभूषण झलकते हैं और श्री राजजी के सामने बैठती हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें झूलते रंग रस।
उछरंग अंग न मावहीं, अंक भर अरस–परस।।४५।।

जो सखियां झूलते समय अरस-परस लिपटकर मस्ती के साथ झूलती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झूलते होंए मगन।
फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन।।४६।।

जो सखियां झूलने में मग्न हो जाती हैं और अंग में प्रेम की मस्ती से मदहोश हो जाती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों झूलत।
इन समें सोभा मन्दिरों, कड़े हिंडोले खटकत।।४७।।

जो सखियां हिंडोलों में झूलती हैं और झूलते समय मन्दिर में हिंडोलों की खटकने की आवाज आती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पौढ़त इन पिउ संग।
अरस–परस दोऊ हींचत, अंग लगाए के अंग।।४८।।

जो सखियां धनी के साथ लेटकर अंग से अंग लगाकर झूला झूलती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत इतकी खुसबोए।
सिनगार कर सेज्या पर, केलि करें संग दोए।।४९।।

जो सखियां सिनगार कर सेज्या पर प्रीतम का सुख लेती हैं और सुगन्ध लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों में नेहेचल।
दोऊ हिंडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल।।५०।।

जो सखियां अखण्ड परमधाम में रहती हैं और सातवीं तथा आठवीं भोमों के हिंडोलों में दिलचाहे सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेवें इन हिंडोलों सुख।
अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख।।५१।।

जो सखियां अखण्ड परमधाम के हिंडोलों में हमेशा सामने बैठने का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों पौंढ़त।
मन चाहे इन मन्दिरों, अखण्ड केलि करत।।५२ ।।

जो सखियां इन मन्दिरों के मनचाहे हिंडोलों में पौढ़ती (लेटती) हैं और अखण्ड प्रेम-क्रीड़ा करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो खेलत इन मोहोलन।
हिंडोलों या पलंगे, सुख लेवें चाहे मन।।५३ ।।

जो सखियां इन महलों में खेलती हैं और हिंडोलों में या पलंगों पर मनचाहे सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोंलों या पलंग।
चित्त चाहे सुख अनुभवी, इन धनी के संग।।५४ ।।

जो सखियां इन महलों में या पलंगों पर या धनी के साथ मनचाहा सुख लेती हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर।
प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर।।५५ ।।

जिन सखियों को धनी नजर भरकर देखते हैं और प्रेम के प्याले नजर से भर-भरकर पिलाते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सेज समारें हेत कर।
चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर।।५६ ।।

जो सखियां बड़े प्यार से सेज्या संवारती हैं और पूरी रात धनी को हृदय में लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो फूलन सेज बिछाए।
चारों पोहोर रंग रेहेस में, केलै करते जाए।।५७ ।।

जो सखियां फूलों की सेज्या बिछाती हैं और पूरी रात अपने धनी के साथ आनन्द से प्रेम-क्रीड़ा करने में बिताती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैंन भर।
आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर।।५८ ।।

जिन सखियों को श्री राजजी महाराज, नजर भरकर देखते हैं उन सखियों के अंग रात-दिन मस्ती में भरे होते हैं। इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, रंग रची सेज समार।
चारों जाम पिउ सब अंगों, देत सुख अपार।।५९ ।।

जो सखियां रस भरी सेज्या सजाती हैं और जिनको प्रीतम पूरी रात सब अंगों का सुख देते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउसों पीवें प्रेम रस।
कर कर साज सबों अंगों, पिउसों अरस–परस।।६०।।

जो सखियां सब अंगों का सिनगार सजाकर धनी से अरस-परस प्रेम रस पीती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ के सुने बंके बैन।
याके आठों जाम हिरदे मिने, चुभ रेहेत पिउ के चैन।।६१।।

जो सखियां धनी के अटपटे वचन सुनती हैं और दिन-रात उन वचनों को हृदय में प्यार से रखती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी भूखन।
याही नजर अंगना अंग में, चुभ रेहेत निस–दिन।।६२।।

जिन सखियों के आभूषणों को धनी देखते हैं, वही नजर अंगना के अंग में चुभकर रात-दिन सुख देती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको पिउ एती दिलासा देत।
सामियों तो अंग इस्क के, कोट गुना कर लेत।।६३।।

उन सखियों को जिनको धनी इतना दिलासा देते हैं, सामने सखियों के अंग इश्क स्वरूप हैं। वह उसे करोड़ गुना अधिक अनुभव करते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी वस्तर।
सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खैंच नजर।।६४।।

जिन सखियों के वस्त्रों को धनी देखते हैं और अपनी अंगना समझकर नजर भरकर देखते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी बरसत निज नजर।
ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर।।६५।।

जिन सखियों के ऊपर धनी की मेहर भरी नजर होती है उनके अंगों के रोम-रोम में प्रेम लबालब भर जाता है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, धनीसों नैनों नैन मिलाए।
ताको इन सरूप बिना, पल पट दई न जाए।।६६।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाती हैं, वह धनी के बिना एक पल भी अलग नहीं रह सकतीं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके धनी निरखें नैन।
आठों–जाम याके अंग में, चुभ रेहेत बंके बैन।।६७।।

जिन सखियों के नयनों को धनी देखते हैं, उनके हृदय में धनी की बांकी छवि के अटपटे वचन आठों पहर अंग में चुभे रहते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ की निरखें बंकी पाग।
निस-दिन नजर न छूटहीं, पिउसों करें रंग राग।।६८।।

जो सखियां धनी की तिरछी पाग (पगड़ी) को निहारती हैं और प्रीतम के साथ आनन्द करती हैं। उनसे वह छवि रात-दिन छूटती नहीं है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत पिया को दिल।
ए निस-दिन पिएं सुधा रस, पिउसों प्याले मिल।।६९।।

जो सखियां पिया के दिल को जीत लेती हैं और रात-दिन धनी के प्रेम प्याले से अमृत रसपान करती है, तो उन्हें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए मोहोल ए सेज।
लें सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज।।७०।।

जो सखियां इन महलों में सेज्या का सुख सब अंगों से लेती हैं और जिन पर धनी फिदा होकर प्यार देते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत।
आठों पोहोर सबों अंगों, अरस-परस रंग रमत।।७१।।

जो सखियां धनी को आठों पहर सब अंगों से परस्पर खेलकर रिझाती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी सों अन्तर नाहें।
अरस-परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहें।।७२।।

जिन सखियों का धनी से कोई अन्तर नहीं है और जो प्रेम में डूबी एक रूप हो गई हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ सों करें एकांत।
आठों-जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत।।७३।।

जो सखियां अपने पिया से एकांत में रात-दिन तरह-तरह के सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ को निरखें नीके कर।
आठों-पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर।।७४।।

जो सखियां धनी को अच्छी तरह से देखती हैं और जिन पर उनकी अमृतमयी नजर आठों पहर रहती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जिनका एह चलन।
आठों पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन।।७५।।

जिन सखियों का धनी के साथ रात-दिन आनन्द में विभोर होकर खेलने का ही काम है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, प्रेम वासा इन ठौर।
एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूं और।।७६ ।।

जिन सखियों के तन ही प्रेम के हैं और प्रेम में ही बसती हैं। यही धनी के प्रेम की पात्र हैं और इनके बिना प्रेम और कहीं नहीं है, इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास।
निस-दिन इन धनीय सों, करत विनोद कई हांस।।७७ ।।

जो सखियां परमधाम के वनों में विलास करती हैं तथा रात-दिन धनी से कई तरह के विनोद-हंसी करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बसत धाम बन माहें।
जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबूं नाहें।।७८ ।।

जो सखियां परमधाम के अखण्ड वनों में रहती हैं जहां एक पत्ता भी नहीं गिरता, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सदा खेलत इन बन।
एक पात की जोत देखिए, करें जिमी अम्बर रोसन।।७९ ।।

जो सखियां सदा इन वनों में खेलती हैं जहां के एक पत्ते का तेज जमीन आसमान में नहीं समाता, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें विलास।
सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास।।८० ।।

जो सखियां इन वनों में धाम धनी के साथ प्रेम से भरपूर सुहागिनियों का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, करें धाम धनी सो केलि।
इन बन इन धनीय सों, रमन अह निस खेलि।।८१ ।।

जो सखियां इन वनों में रात-दिन धनी के साथ प्रेम-क्रीड़ा करती हैं और खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन बन में है हांस।
कमी कबूं न होवहीं, सदा फल फूल बास।।८२ ।।

जिन सखियों का ऐसे वनों में हांस-विलास है जो फल-फूल व सुगन्धि से भरपूर हैं तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन को रस लेत।
फल फूल सुगन्ध बेलियां, वाउ सीतल सुख देत।।८३ ।।

जो सखियां इन वनों में फल, फूल, सुगन्धित लताओं व शीतल वायु के सुख का आनन्द लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।। ८४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मेहबूब! धाम धनी! अब इस फरामोशी के परदे को हटा दो और हमारी आत्मा को जगाकर हमें अपने गले से लगा लो।

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ २३४६ ॥

धाम की रामतें–चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए।। १ ।।

एक सखी दूसरी सखी को चुटकी बजाकर ताली देकर वन की दीवारों पर बने चित्रकारी पर दौड़कर चढ़ती है और कहती है, आकर मुझे छू लो।

एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे।। २ ।।

एक सखी घर में ही उमंग से गलियों में परिकरमा लगाती है और दूसरी सखी का कपड़ा दौड़कर पकड़ती है और मनचाही तरफ खैंच ले जाती है।

छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए।
एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जे पाए।। ३ ।।

एक सखी छज्जे पर चढ़कर दूसरी को ठेका देकर दौड़ती है। एक दोनों पांव से उछलकर खास खेल खेलती है। लगता है जैसे इनका पांव छज्जे पर लगता ही नहीं है।

सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए।। ४ ।।

सब सखियां दौड़कर एक छज्जे पर चढ़ जाती हैं, लगता है छज्जे पर पूरी नहीं आएंगी। इस तरह का खेल खेलती हैं। कोई-कोई सखी दीवारों पर बने घोड़े पर चढ़कर दौड़ती हैं। नए-नए तरह के खेल बनाती हैं।

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यों पड़ियां तीनों गिर।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर।। ५ ।।

एक सखी दूसरी को धकेलती है और दूसरी तीसरी को धकेलती है। तो इस तरह तीनों एक के ऊपर एक गिर पड़ती हैं और सखियां भी आ-आकर इन पर गिर पड़ती हैं तो यह नीचे से उठ नहीं पातीं।

एक दौड़ियां जाए दई हांसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर।। ६ ।।

कई सखियां हंसती-हंसती दौड़ती हैं और दूसरी के ऊपर गिर पड़ती हैं, तो और आकर उनके ऊपर गिरती जाती हैं। कई सखियां खेल में हारकर अलग बैठ जाती हैं, दांव देने की वारी उनकी रहती है।

होवे इन बिध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर।। ७ ।।

इस तरह से अंग में उमंग भरकर हंसती हैं कि हंसी से पेट दर्द करने लगता है। इस पेट दर्द से जमीन पर लेटती हैं। यह इस तरह का खेल है।

Nijanand App